



SHRI KUSHOK THIKSEY NAWANG CHAMBA STANZIN

Shri Kushok Thiksey Nawang Chamba Stanzin is the head of Thiksey Monastery, Leh-Ladakh. He is considered as one of the main architects of modern Ladakh for his selfless lifelong contributions in religious, social and political spheres. He was the first and only Member of Parliament, Rajya Sabha (1998-2002) from Ladakh till date and made noteworthy contributions during his tenure.

2. Born on 20th May, 1943 in Chuchot Village, Leh Ladakh, Shri Kushok Thiksey was recognised as reincarnation of Kushok Thiksey(Thiksey Rinpochey) at the age of 5 by Dalai Lama. At the age of 10, he was sent to Drepung Monastery's Gomang Tatsang in Tibet for his studies. He received many important oral transmissions and initiations during his short educational sojourn in Tibet until 1959.

3. Shri Kushok Thiksey contributed immensely in preserving the very rich monastic heritage and tradition of Ladakh. He streamlined the monastic institutions by setting up exemplary initiatives at Thiksey and Diskit Monasteries. His ingenious welfare initiatives in 1980s like setting up monastic schools and library to impart quality education to the monks, his successful model of common kitchen serving free food to all the resident monks, his pledge to provide complete expenses for the medical treatment of the resident monks, the provision of pension-like fund for the older monks etc. have completely revolutionised the monastic institution in Ladakh while simultaneously preserving the incredible age old Himalayan monastic culture. He also strengthened Ladakh Gonpa Association as a democratic and self-sustaining mother society of all monasteries of Ladakh during his presidentship (1990-97).

4. While inspiring the local artisans and preserving the rich artistic heritage of Ladakh, Shri Kushok Thiksey fully sponsored to build the spiritually vibrant statue of Maitreya Buddha(49ft.) in 1983 at Thiksey Monastery which was the first of its kind in Ladakh and one at Diskit Monastery in 2010 beautifully showcasing Ladakh's artistic heritage and has now become a unique hotspot for both devotees and tourists. Thiksey and Diskit monasteries have now become main centre of spiritualism.

5. Shri Kushok Thiksey has always been extra vocal about imparting the best education to enlighten Ladakhi society. He established Lamzang School in 1989 at Thiksey. His biggest accomplishment is that of instituting Shesrab Skyed Tsai Ling Library and Learning Centre, Thiksey with all the modern facilities like computer, internet facilities, open gym etc. and he dedicated it to the community. Since its establishment, he has conducted 45-days free winter tuition for students. The students as well as teachers are from different faiths and villages strengthening the secular motto of the institution.

6. Shri Kushok Thiksey contributions were recognised recently when he was conferred with Ladakh's highest civilian award 'Ladakh Dpal Rngams Award' in 2021. He has been awarded with various other honours by different monasteries of Ladakh as well as by the Central Tibetan Administration.



श्री कुशोक ठिक्से नवांग चम्बा स्तनज़िन

श्री कुशोक ठिक्से नवांग चम्बा स्तनज़िन थिक्से मठ, लेह—लद्दाख के प्रमुख हैं। उन्हें आधुनिक लद्दाख का एक मुख्य निर्माता माना जाता है जिन्होंने धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में अपना निःस्वार्थ आजीवन योगदान दिया। वह लद्दाख से राज्य सभा (1998–2002) के पहले और एकमात्र सदस्य थे और उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान उल्लेखनीय कार्य किए।

2. 20 मई, 1943 को लेह लद्दाख के चुचोट गांव में जन्मे, श्री कुशोक ठिक्से को 5 वर्ष की आयु में दलाई लामा ने श्री कुशोक ठिक्से (ठिक्से रिनपोचे) के अवतार के रूप में मान्यता दी थी। 10 वर्ष की आयु में, उन्हें अध्ययन के लिए तिब्बत में डेपुंग मठ के गोमांग तत्संग भेज दिया गया। 1959 तक तिब्बत में अपने संक्षिप्त शैक्षिक प्रवास के दौरान उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण मौखिक संदेश और दीक्षाएं प्राप्त कीं।

3. श्री कुशोक ठिक्से ने लद्दाख की अत्यंत समृद्ध बौद्ध मठ विरासत और परंपरा को संरक्षित करने में अत्यधिक योगदान दिया। उन्होंने थिक्से और दिस्किट मठों में अनुकरणीय पहल करके मठवासी संस्थानों को सुव्यवस्थित किया। 1980 के दशक में उनकी उत्कृष्ट कल्याणकारी पहल जैसे भिक्षुओं को उत्तम शिक्षा प्रदान करने के लिए मठवासी स्कूलों और पुस्तकालय की स्थापना, सभी मठवासी भिक्षुओं के निःशुल्क भोजन के लिए साझी रसोई का उनका सफल मॉडल, मठवासी भिक्षुओं के चिकित्सा उपचार के लिए पूरा खर्च प्रदान करने की उनकी प्रतिज्ञा, वृद्ध भिक्षुओं आदि के लिए पेंशन जैसी निधि के प्रावधान ने लद्दाख के मठ संस्थान में एक बड़ा परिवर्तन ला दिया है, साथ ही साथ उन्होंने युगों पुरानी अद्भुत हिमालयी बौद्ध मठ संस्कृति को संरक्षित किया है। उन्होंने अपनी अध्यक्षता (1990–97) के दौरान लद्दाख के सभी मठों के लोकतांत्रिक और आत्मनिर्भर मातृ समाज के रूप में लद्दाख गोन्पा एसोसिएशन को भी मजबूत किया।

4. श्री कुशोक ठिक्से ने, स्थानीय कारीगरों को प्रेरित करते हुए और लद्दाख की समृद्ध कलात्मक विरासत को संरक्षित करते हुए, 1983 में लद्दाख के थिक्से मठ में मैत्रेय बुद्ध (49 फुट) की अपनी तरह की पहली और 2010 में दिस्किट मठ में आध्यात्मिक रूप से जीवंत प्रतिमा के निर्माण को प्रायोजित किया। इनके माध्यम से लद्दाख की कलात्मक विरासत को खूबसूरती से दर्शाया गया है और ये श्रद्धालुओं और पर्यटकों दोनों के लिए एक अनूठा आकर्षण का केंद्र बन गए हैं। थिक्से और दिस्किट मठ अब अध्यात्म के मुख्य केंद्र हैं।

5. श्री कुशोक ठिक्से हमेशा लद्दाखी समाज को जागरूक बनाने के लिए सर्वोत्तम शिक्षा प्रदान करने वाले एक बड़े समर्थक रहे हैं। उन्होंने 1989 में ठिक्से में लामजंग स्कूल की स्थापना की। उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि थिक्से में कंप्यूटर, इंटरनेट, ओपन जिम आदि जैसी आधुनिक सुविधाओं से युक्त शेसरब स्काइड साई लिंग लाइब्रेरी एंड लर्निंग सेंटर की स्थापना करना है और उन्होंने इसे समाज के प्रति समर्पित किया। इसकी स्थापना के बाद से, उन्होंने विद्यार्थियों के लिए 45 दिनों का मुफ्त शीतकालीन शिक्षण आयोजित किया है। विद्यार्थियों के साथ-साथ शिक्षक विभिन्न पंथों और गांवों से हैं जिनसे संस्था के पंथनिरपेक्ष ध्येय को मजबूती मिलती है।

6. श्री कुशोक ठिक्से को उनके योगदानस्वरूप 2021 में लद्दाख के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार 'लद्दाख दपलरंगम्स पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। उन्हें लद्दाख के विभिन्न मठों के साथ-साथ केंद्रीय तिब्बती प्रशासन द्वारा कई अन्य सम्मान प्रदान किए गए हैं।